ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

जिन्दगीनामा' उपन्यास में अविभाजित पंजाब का सामाजिक और सांस्कृतिक चित्रण

गुंसाइ शिवानीबेन अनिलगर

शोधछात्रा,हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी, पाटण, गुजरात
शोधछात्रा

ईमेल: shivanigusai21@gmail.com

- **पुरुष पात्रों :- शाहजी, काशीशाह, लाली शाह, सलामत अली नजीर, मेहर अली, करतार अली।**
- **स्त्री पात्रों :– शाहनी, बिंद्रादइ, राबया, चन्नी, रेशमा।**

हिन्दी साहित्य जगत की बहुत ही प्रभावशाली लेखिकाओं मैं कृष्णा सोबती का नाम शामिल है। कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 में गुजरात (इस समय के पाकिस्तान) में हुआ था। उनकी शिक्षा दिल्ली, शिमला और लाहौर में हुई। दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विभाग में 'प्रौढशिक्षा' के संपादक के रूप में उन्होंने काम किया। वह महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविधालय, वर्धा के सदस्य भी रह चुके हैं। अपने 30 वर्षों के लेखन करियर के दौरान उन्होंने 'डर से बिछुड़ी' (1968), 'मित्रो मरजानी' (1967), 'जिन्दगीनामा' (1979), 'तिन पहाड़' 'सूरजमुखी अंधेरे के' (1990), , 'दिलो दानिश' जैसे उपन्यास और 'हम हशमत', 'बादलों के घेरे' कहानियों का संग्रह दिए है। उनके कई उपन्यास ओर कहानियों का अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद किया गया हैं। कृष्णा सोबती ने अपनी सभी रचनाओं में अन्तवस्तु व कथाशिल्प के स्तर पर अभिनव प्रयोग किए हैं।

पंजाब शब्द दो फ़ारसी शब्दों का एक यौगिक है, पंज ("पांच") और आब ("पानी"), अत: पाँच जल, या नदियों (ब्यास, चिनाब, जेहलम, रावी, और सतलुज)

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

की भूमि को दर्शाता है। शब्द की उत्पत्ति का पता संभवतः "पांच नदियों" के लिए संस्कृत शब्द पंका नाडा से और प्राचीन महाकाव्य महाभारत में वर्णित एक क्षेत्र के नाम से लगाया जा सकता है। वर्तमान भारतीय राज्य पंजाब का यह नाम केवल मिथ्या नाम बनकर रह गया है क्यूंकि 1947 में भारत के विभाजन के बाद से, पांच में से केवल दो नदियां, सतलुज और ब्यास, पंजाब के क्षेत्र में स्थित हैं, जबकि रावी केवल इसकी पश्चिमी सीमा के साथ बहता है।

प्राचीन काल से ग्राम भारतीय समाज व्यवस्था का एक आधारभूत एवं महत्वपूर्ण अंश रहा है। इस उपन्यास में बादशाह और फकीर, दरवेश और किसान एक साथ खेतों की मुंडेरों पर खड़े मिलेंगे। इस उपन्यास की शुरुआत कविताओं से होती हैं। यह पंजाब के अंचल में रहने वाले लोगों की जिन्दगी का जीवन्त इतिहास प्रस्तुत करता है। गरीबी, अज्ञान, अंधविश्वास के कारण परंपरागत ढंग से खेती की जाती थी। इसी कारण उससे अच्छी फसल नहीं मिलती। किसान अंधविश्वासी होने के कारण वह फसल में उतना ध्यान नहीं देता था। कृष्णा सोबती के 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में मुख्य विषय के रूप में पंजाब की साझा संस्कृति, डेरा जट्टा गांव की दिन की गतिविधियां, चौपाल में व्यक्त वहां के लोगों की विविध प्रतिक्रियाएं, स्वाधीनता संग्राम और देश प्रेम की अनुगूंजे, कुछ लोगों के दुस्साहस कारनामे और शाहों की जिन्दगी के उतार चढ़ाव आदि निरूपित हुए है। इस में न कोई नायक है, न कोई खलनायक, सिर्फ लोग हैं। यह उपन्यास जीवन अनुभव के अनुसार अपना ढांचा स्वयं बनाता है। 'जिन्दगीनामा' का उपशीर्षक 'जिंदा रुख' है, जो उपन्यास के पहले भाग के उपशीर्षक रूप में दर्ज है।

इस उपन्यास के आरंभ और अंत तक लेखिका के समर्पण भाव से ही लेखिका के सरोकार अत्यंत स्पष्ट हैं। सांझी पंजाबी संस्कृति से लेखिका का गहरा भावनात्मक लगाव है, इसलिए डेरा जट्टा गाँव को उन्होंने इस सांझी संस्कृति के

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

प्रतीक रूप में चित्रित किया है। उनकी जीवन दृष्टि व औपन्यासिक संरचना की दृष्टि अधिकांशत इस संस्कृति के जीवंत चित्रण में केंद्रित हैं।

सांझी पंजाबी संस्कृति के निर्माण में करीब तीन सौ वर्ष पुराने सिख धर्म की भी काफी प्रभावी भूमिका है, जिसने लेखिका की जीवन दृष्टि के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाई है। उपन्यास का समर्पण ही गुरु गोविंद सिंह के फारसी भाषा में लिखे खत की इन प्रसिद्ध पंक्तियों से हुआ है, जिनका अर्थ है - 'जब दूसरे सब रस्ते कारगर न हो सके तो जुल्म के खिलाफ तलवार उठा लेना जायज है।' उपन्यास के केंद्रीय चरित्र शाह जी द्वारा इन्हीं शब्दों से उपन्यास का अंत भी होता हैं -

चू कार अज हमां हीलते दरगुजश्त ।

हलालस्त बुर्दन ब शमशीर दश्त ।।

सिख धर्म के गुरुओं की वाणी ने लेखिका की जीवन दृष्टि के निर्माण मैं बहुत बड़ी भूमिका निभाई है यह धर्म ही धार्मिक कुरीतियों के विरोध स्वरुप पैदा हुआ हैं और मानवतावादी चिंतन उसका मूल आधार रहा है। इसलिए के गाँवो में हिंदू, सिख और मुसलमान सब मिल जुलकर साथ में रहते थे। विभाजन के पहले हिंदू परिवार के एक बेटे को सिख धर्म में दिक्षित करने का रिवाज भी था। इसलिए अभी भी ऐसे लोग मिलते है जो हिंदू और सिख दोनों धर्म पालते है।

लेखिका गुरुवाणी से प्रभावित होने से सांझी पंजाबी संस्कृति का प्राण तीनों समुदायों के परस्पर सौहार्द और प्रेम को मानती हैं। अंग्रेजों के आने के बाद तनाव और कटुता थोड़ी बढ़ी। देश के स्वतंत्रता संग्राम में तीनों समुदायों की भागीदारी रही हैं। ऐसे पहलुओं को लेखिका ने अपने इस उपन्यास में खूबसूरत तरीके से दर्शाया है। जो इनकी सकारात्मक मानवीय जीवन दृष्टि को दर्शाता हे। लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से यहां तक संदेश दिया है कि स्त्री-पुरुषों के संबंधों

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

में भी धर्म आड़े नहीं आता। इसी लिए मुस्लिम परिवार की राबिया, हिंदू शाह जी को अपना आराध्य मान बैठती हैं और एक विधवा हिंदू स्त्री मुसलमान को दिल दे बैठी हुए मालूम पड़ती हैं। लेखिका इसे मानवीय कार्य-व्यापार मानती है।

यह उपन्यास प्रमुख तौर पर राष्ट्रीय आंदोलन का उपन्यास नहीं है, लेकिन प्रासंगिक रूप में यहां ऐसे संदर्भ हैं। उपन्यास में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ, 1905 के बंग-भंग और 1911 के बंगाल के एकीकरण का उल्लेख है जो कि लेखिका कि राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति सहानुभूति को दर्शाता हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन में भी लेखिका की संवेदना क्रांतिकारी आंदोलन से अधिक जुड़ी हुई हैं, सुधारवादी आंदोलन से कम। गुरु गोविंदसिंहजी की पंक्तियों के चयन से भी लेखिका की क्रांतिकारीयो से प्रतिबद्धता नजर आती है और उपन्यास में परोक्ष रूप से वर्णित या चित्रित उस काल की राजनीतिक घटनाओं के संदर्भ में भी लेखिका का यही दृष्टिकोण नजर आता हैं। 1907 में लाला लाजपत राय और शहीद भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह के देश-निष्काषन, उस समय चले किसान आंदोलन और उस आंदोलन में पंजाबी कवि लाल चंद 'फलक' द्वारा रचित देशभक्ति के प्रसिद्ध गीत 'पगड़ी संभाल जट्टा' के जिक्र और कवि पर सरकार की सख्ती के वर्णन, 1909 में इंग्लैंड में मदन लाल ढींगरा द्वारा कर्ज़न वायली की हत्या और ढींगरा को फांसी दिए जाने की घटना के उल्लेख और उपन्यास के अंत में उपन्यास के चरित्र गंडा सिंह के इस कथन कि 'होगा अब यह की गदरी और इन्कलाबियो ने मिलकर सरकार का झाड़ा मूत्र बंद कर देने है। भावे रोम्ब लिखवा लो शाह जी, हुकूमत का पट्टा देसी रियाया के हाथों में पहुंच कर रहेगा।' (जिन्दगीनामा, 1983 संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.361)

इस उपन्यास में देशभक्ति के किसी भी प्रसंग के चित्रण लेखिका की सहानुभूति व समर्पण क्रांतिकारी आंदोलन के योद्धाओं को मिले हैं, जिस कारण यह उपन्यास

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में महत्वपूर्ण बना है। शोषकों - उत्पीड़कों के प्रति नफरत की भावना उपन्यास में आदि से अंत तक व्याप्त है। लेखिका ने गरीबों, किसानों, सैनिकों, कामदारों एवं बेरोजगार युवाओं का पक्ष लेकर अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की हैं। स्त्री चरित्रों जैसे की शाहनी, बिंद्रादयी, महेरी चाची, राबया, विधवा ब्राह्मणी आदि के प्रति विशेष सहानुभूति व्यक्त की है, फिर भी उपन्यास में सामाजिक स्तर पर पुरुष पात्रों का अधिक प्रभुत्व दिखने को मिला है।

इस प्रकार इस उपन्यास में अंचल की अनेक समस्याओं का तथा अंचल के नैतिक अनैतिक संबंधों का यथार्थ अंकन हुआ है। साथ ही यह उपन्यास गहन साझा पंजाब की सामाजिक और सांस्कृतिक मानवीय जीवन दृष्टि को भी चित्रित करता है। इस उपन्यास का प्रभाव वैश्विक स्तर पर भी पड़ा है। इस उपन्यास की सफलता लेखिका की गहरी मानवीय जीवन दृष्टि है। इस उपन्यास की विशेषता यह भी है की इस पर से 'ट्रेन टू पाकिस्तान' फिल्म बनी है।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Issu 1, 2022

(1) जिन्दगीनामा, 1983 संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

(2) https://hindi.culturenorthindia.com/%E0%A4%AA%E0%A4%82%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%AC/

(3) कृष्णा सोबती का आंचलिक उपन्यास - जिन्दगीनामा में संस्कृति दर्शन, डॉ. हेमलता श्याम पाटील, Navjot /Vol. III / Issue – I, ISSN 2277-8063,

(4) कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर, प्र. संस्करण 2011

(5) 'जिन्दगीनामा': प्रमुख पात्र एवं चरित्र चित्रण, इकाई 7, https://egyankosh.ac.in

(6) परिवेश और भाषा, इकाई 8, https://egyankosh.ac.in